International Journal of Advanced Education and Research
ISSN: 2455-5746, Impact Factor: RJIF 5.34
www.alleducationjournal.com
Volume 2; Issue 4; July 2017; Page No. 267-270

सतना जिले के सोहावल विकासखण्ड में निःशुल्क साइकिल वितरण योजना के परिणाम स्वरूप बालिकाओं के स्वास्थ्य पर प्रभाव का अध्ययन

डॉ. मन्जू कुषवाहा

प्राचार्य, मनोज जैन मेमोरियल शिक्षा महाविद्यालय, सतना, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र सतना जिले के सोहावल विकासखण्ड में निःशुल्क साइकिल वितरण योजना के परिणाम स्वरूप बालिकाओं के स्वास्थ्य पर प्रभाव का अध्ययन पर आधारित है। शोध क्षेत्र में भी मध्यप्रदेश शासन द्वारा कक्षा 6वीं एवं 9वीं में दर्ज पात्र बालिकाओं को उनकी शिक्षा जारी रखने के लिए निःशुल्क साइकिल वर्ष 2004–05 से दी जा रही है। निःशुल्क साइकिल योजना का लाभ समस्त वर्गों की ऐसी समस्त बालिकाओं को मिलता है जिनके –जिनके ग्राम में माध्यमिक शिक्षा सुविधा उपलब्ध नहीं है तथा जो अन्य ग्राम/ शहर में जाकर शासकीय शालाओं की कक्षा 6वीं एवं 9वीं में प्रवेश लेकर अध्ययन करती है। योजना के अन्तर्गत कक्षा 6वीं की बालिकाओं के लिए 18 इंच साइकिल हेतु अधिकतम अनुदान राशि रु. 2300/– एवं कक्षा 9वीं की बालिकाओं के लिए 20 इंच साइकिल हेतु अधिकतम अनुदान राशि 2400/– प्रति पात्र बालिकाओं को इस योजना का लाभ मिला। इस योजना से बालिकाओं की अध्ययन में रुचि बढ़ी है। ड्राप–आउट बालिकाओं की संख्या में कमी आई एवं उनके आत्मविश्वास में भी वृद्धि हो रही है।

शब्द कुन्जी : सतना जिला, सोहावल विकासखण्ड, निःशुल्क साइकिल वितरण योजना, बालिका, स्वास्थ्य

1. प्रस्तावना

वेदों में नारी की शिक्षा, शील, गुण, कर्तव्य और अधिकारों का विषद् वर्णन है। इस प्रकार का वर्णन संभवतः संसार के किसी भी धर्मग्रंथ में नहीं है। चारों वेदों में सैकड़ों नारी विषयक मंत्र दिए गए हैं, जिनसे स्पष्ट होता है कि वैदिक काल में नारी का समाज में विशेष स्थान था तथा पुरुषों की भाँति उन्हें जीवन के हर क्षेत्र में बराबर का स्थान प्राप्त था। वैदिक साहित्य के अध्ययन से ज्ञात होता है कि भारतवर्ष के समाज में नारियों को बहुत गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त था। स्त्रियों की शिक्षा–दीक्षा की उत्तम व्यवस्था थी। स्त्रियाँ राजनीतिक, सामाजिक तथा प्रशासनात्मक कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थीं। 'शिक्षा सतत् चलने वाली प्रक्रिया है।'

मनुष्य ने आदिकाल से ही शिक्षा के महत्व को स्वीकार किया है। सीखने की प्रक्रिया सतत् क्रियाशील रहती है। जब बालक अपनी माता के गर्भ में होता है तब से सीखने की प्रक्रिया प्रारंभ हो जाती है और जीवन पर्यन्त चलती रहती है।

पंडित जवाहरलाल नेहरू ने ठीक ही कहा था कि – "लड़के की शिक्षा केवल एक व्यक्ति की शिक्षा है, किन्तु एक लड़की की शिक्षा सारे परिवार की शिक्षा है।"

शिक्षा मनुष्य के लिए अनिवार्य घटक है। समाज में शिक्षा के क्षेत्र में असामनता के सैकड़ों उदाहरण हैं जिनमें बालिका शिक्षा की स्थति सोचनीय है। 'एक शिक्षित बालिका श्रेष्ठ समाज का निर्माण करती है' महात्मा गांधी ने स्त्री को समाज में बराबर का स्थान प्रदान किया और स्त्री शिक्षा की विशेष व्यवस्था का सुझाव दिया।

बालिका शिक्षा हेतु शासन द्वारा जो प्रोत्साहन योजनाएँ संचालित हैं उनमें गणवेश वितरण दो सेट, चप्पल, निःशुल्क साइकिल वितरण, निःशुल्क पाठ्य पुस्तक व छात्रवृत्ति शामिल हैं। राज्य सरकार ने बालिकाओं की शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु वर्ष 2004–05 से निःशुल्क साइकिल वितरण की घोषणा की है जिसमें कक्षा 6वीं, 9वीं व 11वीं में अध्ययनरत छात्राएँ लाभान्वित होंगी।

जिनके ग्राम में माध्यमिक शिक्षा सुविधा उपलब्ध नहीं है तथा जो अन्य ग्राम/शहर में जाकर शासकीय शालाओं में प्रवेश लेकर अध्ययन करती हैं योजना के अंतर्गत 6वीं की बालिका को 18 इंच की साइकिल, अधिकतम् अनुदान राशि 2300 रूपये एवं कक्षा 9वीं की बालिकाओं के लिए 20 इंच की साइकिल हेतु अधिकतम् अनुदान राशि 2400 रूपये प्रति पात्र बालिका के मान से साइकिल क्रय हेतु राज्य शासन द्वारा दी जायेगी।

2. शोध शीर्षक में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण

- **सतना जिला :–** मध्यप्रदेश के उत्तर पूर्व में 29.58 एवं 25.12 अक्षांश उत्तर तथा 81.21 एवं 81.23 देशांतर पूर्व के मध्य स्थित है। क्षेत्रफल 7502 किलो मीटर है। यह संभाग का एक राजस्व जिला है।
- **सोहावल विकासखण्ड :–** सतना जिले के 8 विकासखण्डों में से एक है। जिसका मुख्यालय जिले के पश्चिम दिशा में सतना नगर से 07 किलो मीटर दूरी पर है। यह नागौद, अमरपाटन, मैहर, उचेहरा, मझगवॉ व रामपुर बाघेलान की सीमाओं को स्पर्श करता है।
- **बालिकाओं के स्वास्थ्य पर प्रभाव :–** वितरण योजना से लाभान्वित बालिकाओं के प्रतिदिन साइकिल चलाने के कारण स्वास्थ्य पर पड़ने वाले परिवर्तन से है।
- **प्रभाव का अध्ययन :–** बालिकाओं की शिक्षा हेतु संचालित निःशुल्क साइकिल वितरण योजना के सकारात्मक परिणामों एवं कमियों का अध्ययन करना।

3. अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

प्रस्तुत शोध के महत्व का निर्धारण शोध हेतु पूर्व में सुनिश्चित किये गए उददेश्यों की प्रति पूर्ति पर आधारित है। इस दृष्टि से इस शोध कार्य के निम्नलिखित महत्व हैं :–

- प्रारंभिक शिक्षा उपरांत छात्राओं की आगे की शिक्षा जारी रखने में आने वाली कठिनाइयों की जानकारी प्राप्त हो सकेगी।
- अध्ययनरत् बालिकाओं के पारिवारिक व शैक्षिक वातावरण की जानकारी पता लगेगी।
- अध्ययनरत् बालिकाओं के स्वास्थ्य की वास्तविक स्थिति एवं शैक्षिक उपलब्धि की जानकारी प्राप्त हो सकेगी।

4. उद्देश्य

- प्रारंभिक शिक्षा उपरांत बालिकाओं को आगे की शिक्षा जारी रखने में आने वाली कठिनाइयों का पता लगाना।
- अध्ययनरत् बालिकाओं पर निःशुल्क साइकिल वितरण से पड़ने वाले स्वास्थ्य की वास्तविक स्थिति एवं शैक्षिक उपलब्धि की जानकारी प्राप्त करना।

5. शोध की परिकल्पनायें :

- प्रारंभिक शिक्षा उपरांत उन्नत कक्षाओं में अध्ययन हेतु आवागमन का साधन प्रमुख बाधक है।
- निःशुल्क साइकिल वितरण से प्राप्तकर्ता बालिकाओं का शारीरिक स्वास्थ्य बेहतर हुआ है।

6. शोध कार्य का परिसीमन व न्यादर्श

शोध समस्या के विस्तृत होने के कारण एवं समय की सीमा के कारण शोध क्षेत्र का परिसीमन निम्नानुसार किया गया हैः–

- **भौगोलिक क्षेत्र का परिसीमन :–** प्रस्तावित शोध कार्य मध्यप्रदेश के सतना जिले में सोहावल विकासखंड की राजस्व परिसीमा तक परिसीमित किया गया है। उपरोक्तानुसार परिसीमित शोध क्षेत्र में संचालित पूर्व एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों को शोध अध्ययन में सम्मिलित किया गया है।
- **विषय वस्तु परिसीमन :–** शोध क्षेत्र में उपलब्ध संस्थाओं में निःशुल्क साइकिल वितरण योजना से लाभान्वित बालिकाओं के शारीरिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि के मूल्यांकन तक परिसीमित किया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तावित शोध कार्य सतना जिले के सोहावल विकासखण्ड में पूर्व माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत बालिकाओं से संबंधित है। परिसीमन से ऑकड़ों का निर्धारण दैव निदर्शन विधि से वर्तमान समय पर अध्ययनरत बालिकाओं के अभिभावकों की राय का अध्ययन करना प्रस्तावित है।

शोध में विकासखण्ड अंतर्गत 04 उच्चतर माध्यमिक हायर सेकेण्डरी, 02 हाईस्कूल, और 04 पूर्व माध्यमिक विद्यालयों का चयन कर प्रत्येक विद्यालय से 02–02 शिक्षक/शिक्षिका कुल 20 शिक्षक/शिक्षिका, चयनित विद्यालयों की 10–10 बालिकायें कुल 100 बालिकाओं का चयन न्यादर्श के रूप में किया जायेगा। सभी विद्यालयों के संस्था प्रधान एवं 50 अभिभावक समाविष्ट किये जायेंगे।

7. अध्ययन विधि : प्रस्तुत शोध समस्या के अध्ययन हेतु निम्न विधियों का प्रयोग किया गया है–

- **सर्वेक्षण अध्ययन विधि :** सर्वेक्षण अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसके द्वारा शोध समस्या के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित आंकड़ों का संग्रहण किया जाता है। आंकड़े मुख्य तथा वर्तमान स्तर का निर्धारण, वर्तमान स्तर की मान्य स्तर से तुलना तथा वर्तमान स्तर को विकसित करने में महत्वपूर्ण उपादान होते हैं। सर्वेक्षण में व्यक्ति की अपेक्षा तथ्यों, परिस्थितियों तथा गणनाओं को प्राथमिकता दी जाती है।
- **साक्षात्कार विधि :** शैक्षिक अनुसंधान में साक्षात्कार विधि का प्रयोग सर्वाधिक किया जाता है। इस विधि के द्वारा गुणात्मक एवं संख्यात्मक दोनो प्रकार की जानकारियाँ प्राप्त की जा सकती हैं। इस अनुसंधान में भी शोधार्थी ने साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया है।

8. शोध उपकरण

शोधार्थी ने निःशुल्क साइकिल वितरण योजना के परिणाम स्वरूप बालिकाओं के स्वास्थ्य पर प्रभाव के सम्बन्ध में उत्तरदाताओं से जानकारी प्राप्त करने हेतु साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया है।

9. पूर्व अध्ययन समीक्षा

पूर्ववर्ती अध्ययन से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सबन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोशों, पत्र–पत्रिकाओं, शोध पत्रों तथा अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निमार्ण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने तथा कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है इनमें से मुख्य रूप से कौल, लोकेश (1998)[1], दुबे, वर्षा (2008)[2], मिश्र भागवत प्रसाद (2004)[3] एवं पाठक, पी.डी. (1998)[4] ने शोध विधि एवं निःशुल्क साइकिल वितरण योजना के परिणाम स्वरूप बालिकाओं के स्वास्थ्य पर प्रभाव से सम्बन्धित कार्य किये है।

10. सतना जिले का सामान्य परिचय

भारत के हृदय स्थल में बसा मध्यप्रदेश अपने आप में विभिन्न संस्कृतियों, पुरासम्पदाओं, प्राकृतिक सौंदर्यता, अनमोल धरोहरों, धार्मिक स्थलों, अनुपम कलाकृतियों से सुसज्जित है। सतना मध्यप्रदेश के उत्तर पूर्वी सीमा के मध्य स्थित वर्तमान रीवा संभाग का एक महत्वपूर्ण व्यवसायिक एवं औद्योगिक प्रधान जिला है। जिले के उत्तर में उत्तर प्रदेश का बाँदा जिला पूर्व में रीवा एवं सीधी जिला, दक्षिण में शहडोल व जबलपुर जिला, तथा पश्चिम में पन्ना जिला स्थित है। जिला अपनी धार्मिक विरासतों, औद्योगिक संस्थानों, सांस्कृतिक ऐतिहासिक परिदृश्यों, प्रमुख वनोपज एवं खनिज के कारण सर्वोच्च शिखर पर है। जिला वीर, पराक्रमी, योद्धाओं, वीरांगनाओं, सेनानियों आदि से जाना पहचाना जाता है। सतना जिले का 23.58º-25.12º उत्तरी अक्षांश व 80.12º-81.23º पूर्वी देशान्तर तथा 370.00 मीटर समुद्र तल से ऊँचाई पर स्थित है।

11. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, जो निम्नानुसार है–

परिकल्पना क्र. 01 – "प्रारंभिक शिक्षा उपरांत उन्नत कक्षाओं में अध्ययन हेतु आवागमन का साधन प्रमुख बाधक है।"

सारणी 1 : प्रारंभिक शिक्षा उपरांत उन्नत कक्षाओं में अध्ययन हेतु आवागमन का साधन प्रमुख बाधक है, का अध्ययन

स.क्र.	जानकारी संकलन के स्त्रोत	न्यादर्ष मे चयनित संख्या	उन्नत कक्षाओं में अध्ययन हेतु आवागमन का साधन प्रमुख बाधक है			
			हॉ		नहीं	
			संख्या	प्रतिषत	संख्या	प्रतिषत
1.	संस्था प्रधान	10	07	70.00	03	30.00
2.	शिक्षक	20	17	85.00	03	15.00
3.	अभिभावक	50	40	80.00	10	20.00
4.	बालिकाएँ	100	82	82.00	18	18.00
योग		180	146	81.11	34	18.89

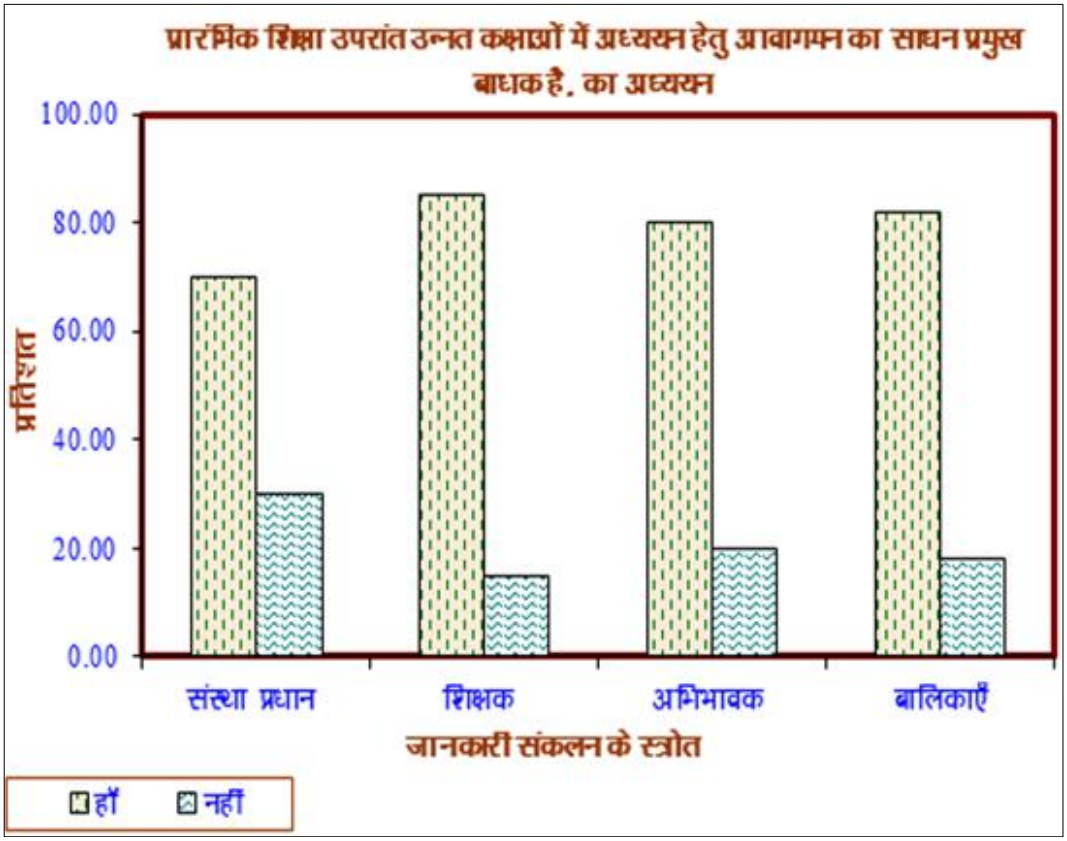

आकृति 1

विष्लेषण : सारणी क्रमांक 01 में प्रारंभिक शिक्षा उपरांत उन्नत कक्षाओं में अध्ययन हेतु आवागमन का साधन प्रमुख बाधक है के संबंध में जानकारी संकलन के स्त्रोतों के आधार पर यह पाया गया कि 10 संस्था प्रधानो में से 70.00 प्रतिशत संस्था प्रधान बालिकाओं को उन्नत कक्षाओं में अध्ययन हेतु आवागमन का साधन प्रमुख बाधक है, जबकि 30.00 प्रतिशत संस्था प्रधान इससे भी सहमत नहीं हैं। 20 शिक्षकों में से 85.00 प्रतिशत ने भी उन्नत कक्षाओं में अध्ययन हेतु आवागमन का साधन प्रमुख बाधक है, जबकि 15 प्रतिशत शिक्षक भी इससे सहमत नहीं है।

शोधार्थी ने इस विषय में 50 अभिभावकों के मत भी प्राप्त किए। 50 अभिभावकों में से 80.00 प्रतिशत अभिभावक भी उन्नत कक्षाओं में अध्ययन हेतु आवागमन का साधन प्रमुख बाधक है। मात्र 20.00 प्रतिशत अभिभावक इससे असहमति व्यक्त करते हैं।

बालिकाएँ 82.00 प्रतिशत उन्नत कक्षाओं में अध्ययन हेतु आवागमन का साधन प्रमुख बाधक मानती है, जबकि 18.00 प्रतिशत इस मत से सहमत नही है।

व्याख्या : विश्लेषित तथ्यों से स्पष्ट है कि 81.11 प्रतिशत अभिमत है कि उन्नत कक्षाओं में अध्ययन हेतु आवागमन का साधन प्रमुख बाधक बताया है।

अतः परिकल्पना क्रमांक 01 **सत्यापित** होती है।

परिकल्पना क्र. 02 – "निःशुल्क साइकिल वितरण से प्राप्तकर्ता बालिकाओं का शारीरिक स्वास्थ्य बेहतर हुआ है।"

सारणी 2 : निःशुल्क साइकिल वितरण से प्राप्तकर्ता बालिकाओं का शारीरिक स्वास्थ्य का अध्ययन

स.क्रं.	जानकारी संकलन के स्त्रोत	न्यादर्ष मे चयनित संख्या	निःशुल्क साइकिल वितरण से प्राप्तकर्ता बालिकाओं का शारीरिक स्वास्थ्य बेहतर हुआ है			
			हाँ		नहीं	
			संख्या	प्रतिषत	संख्या	प्रतिषत
1.	संस्था प्रधान	10	09	90.00	01	10.00
2.	शिक्षक	20	16	80.00	04	20.00
3.	अभिभावक	50	32	64.00	18	36.00
4.	बालिकाएँ	100	66	66.00	34	34.00
	योग	180	123	68.33	57	31.67

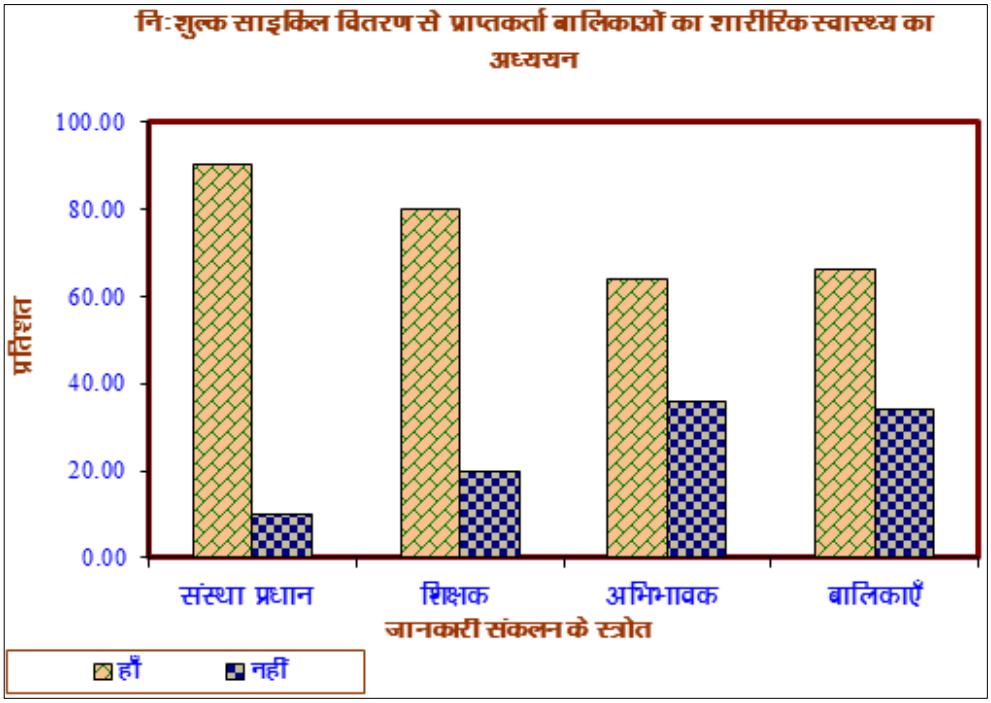

आकृति 2

विष्लेषण : सारणी क्रमांक 02 में जानकारी संकलन स्रोतों के अनुसार संस्था प्रधान 90.00 प्रतिशत, शिक्षक 80.00 प्रतिशत, अभिभावकों ने 64.00 प्रतिशत तथा बालिकाएँ 66.00 प्रतिशत स्वीकार करते हैं कि निःशुल्क साइकिल वितरण से प्राप्तकर्ता बालिकाओं का शारीरिक स्वास्थ्य बेहतर हुआ है।

व्याख्या : सारणी 02 में शोधार्थी ने विभिन्न स्रोतों के अनुसार पाया कि 68.33 प्रतिशत निःशुल्क साइकिल वितरण से प्राप्तकर्ता बालिकाओं का शारीरिक स्वास्थ्य बेहतर हुआ है।
अतः परिकल्पना क्रमांक 02 **सत्यापित** होती है।

12. निष्कर्ष

शोध अध्ययन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि संस्था प्रधान, शिक्षक, अभिभावक व बालिकाओं के दृष्टिकोण के अनुसार प्रारंभिक शिक्षा उपरांत उन्नत कक्षाओं में अध्ययन हेतु आवागमन का साधन प्रमुख बाधक है और निःशुल्क साइकिल वितरण से प्राप्तकर्ता बालिकाओं का शारीरिक स्वास्थ्य बेहतर हुआ है।

13. सन्दर्भ ग्रंथ

1. कौल, लोकेश : शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली, विकास पब्लिसिंग हाउस प्रा.लि. नई दिल्ली, 1998.
2. दुबे, वर्षा : सीधी जिले के शासकीय प्राथ. शालाओं में संचालित प्रोत्साहन योजनाओं के प्रभावशीलता का समीक्षात्मक अध्ययन, एम.एड. लघु शोध प्रबन्ध, अ.प्र. सिंह वि.वि. रीवा, 2008.
3. मिश्र भागवत प्रसाद : रीवा संभाग में बालिकाओं की प्राथमिक शिक्षा की प्रभावशीलता का समीक्षात्मक अध्ययन, अप्रकाशित शोध ग्रंथ, शिक्षा अ.प्र.सि.वि.वि. रीवा, 2004.
4. पाठक, पी.डी. : भारतीय शिक्षा का विकास एवं समस्याएँ, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 1998.